14

जन्म व शैशवकाल

(मत्ती 1, 2; लूका 1, 2)

1. एक के बाद एक दर्शन। –सुसमाचार के इतिहास का आरम्भ चार दर्शनों की शृंखला के साथ होता है।

क. जकर्याह का दर्शन। –जकर्याह एक निष्कलंक बुज़ुर्ग याजक था। जिब्राइल स्वर्गदूत, जिसने दानिय्येल पर मसीहा के आगमन की बात प्रकट की थी (दानि. 9:21-23), ने उसे मन्दिर में अपने दायित्वों को निभाते हुए दर्शन दिया और बताया कि उसकी प्रार्थनाओं का जवाब उसकी पत्नी इलीशिबा से जन्मे उसके पुत्र में मिलेगा। इसके चिह्न और प्रतिज्ञा पर मुहर के रूप में, उसने इस बात के पूरा होने तक गूंगा रहना था।

ख. मरियम का दर्शन। –इलीशिबा की रिश्तेदारी में एक बहन थी मरियम, जो दाऊद के वंश से थी। वह अविवाहित थी, उसकी मंगनी यूसुफ नामक एक पुरुष से हुई थी। उसके पास भी उसी स्वर्गदूत को यह शुभ संदेश देकर ज़ेजा गया कि वह भी एक पुत्र को जन्म देगी और वह पवित्र आत्मा की ओर से होगा, जो परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा और लोगों को उद्धार दिलाएगा। आनन्द से भरी हुई, वह नासरत में अपने घर से गलील में यहूदिया के उस पहाड़ी देश में अपनी कुटुम्बिनी से मिलने चली गई।

ग. यूसुफ का दर्शन। –नासरत से लौटने पर, मरियम का आनन्द शोक में बदल गया। यहूदियों में, मंगनी को विवाह की तरह ही पवित्र माना जाता था; और मरियम के इस बंधन के स्पष्ट उल्लंघन का मतलब उसकी अपमानजनक मृत्यु थी। परन्तु एक तीसरे दर्शन ने यूसुफ पर होने वाली महत्वपूर्ण बातों पर रोशनी डाली और उसके साथ भविष्यवाणी में प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र का नाम इम्मानुएल अर्थात परमेश्वर हमारे साथ बताया गया (तु. मत्ती 1:23; यशा. 7:14)।

2. बैतलहम में चरनी का पालना। –इसी समय दोनों प्रतिज्ञाएं पूरी हो गईं। परमेश्वर के निर्देश के अनुसार जकर्याह और इलीशिबा के पुत्र का नाम यूहन्ना रखा गया। कुछ माह बाद मरियम ने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया और उस दर्शन में बताए गए के अनुसार बालक का नाम *यीशु* रखा जिसका अर्थ उद्धार करने वाला है। बहुत से दूसरे ढंगों की तरह मानवीय योजनाएं अनजाने में परमेश्वर के उद्देश्य से जुड़ गईं। मसीह का जन्म बैतलहम में होना था (मीका 5:2)। अगस्तुस कैसर के आदेश पर जनगणना के लिए यूसुफ और मरियम को अपने गृहनगर बैतलहम में आना पड़ा। मार्टिन लूथर की मां की तरह मरियम को भी घर से ही प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। सराय में भीड़ बहुत थी और इस निर्धन दम्पति को

मिलने वाला आश्रयस्थल अस्तबल जैसा था। जब अगस्तुस अपने विशाल राज्य की योजनाएं बनाने में व्यस्त था, और हेरोदेस नए मंसूबे बना रहा था, तथा संसार के दूसरे लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे, और किसी को भी उस महत्वपूर्ण घटना का ध्यान नहीं था, तो *परमेश्वर के पुत्र* ने जन्म लिया।

3. चरवाहों का दर्शन। -पृथ्वी अपने राजा के आने के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी; परन्तु स्वर्ग शांत न रह सका। स्वर्गदूतों ने राजाओं और दरबारों, घमण्डी याजक या फरीसी के पास नहीं बल्कि निर्धन चरवाहों के पास आनन्द का समाचार पहुंचाया और ''पृथ्वी पर शांति'' के गीत गाए;[1] जो उस छोटे से पालने को देखने के लिए, पृथ्वी पर संसार के छुड़ाने वाले का दर्शन करने के लिए आने वालों में सबसे पहले थे। वे आम लोगों के जिन्होंने ''आनन्द से उसे सुना'' और जिन्होंने उसके बहुत से चेले बनाए, अग्रदूत और प्रतिनिधि थे।[2]

4. मन्दिर के लोग। -यहूदी रीति के अनुसार, उसका खतना और नामकरण आठवें दिन हुआ। चालीस दिन के बाद मरियम व्यवस्था के अनुसार यरूशलेम में भेंट चढ़ाने के लिए छह मील तक चलकर गई (लैव्य. 12)। ''मन्दिर का प्रभु प्रभु के मन्दिर में आया था।'' उनकी कंगाली इतनी स्पष्ट थी (तु. लूका 2:24; लैव्य. 12:8) कि उस बड़े आंगन में ग्रन्थी और याजक का उनकी ओर ध्यान ही नहीं गया। परन्तु, वहां भी बैतलहम की पहाड़ियों की तरह ऐसे श्रद्धालु थे जो लम्बे समय से आने वाले मसीहा को आनन्द से पहचानने के ईश्वरीय जोश और रोमांच से भरे हुए थे। शिमौन और हन्ना नामक दो बुज़ुर्ग भविष्यवाणी की उस आत्मा के प्रतिनिधि हैं जिसने इब्रानी कौम को मर्यादा में रखा था और सार्वजनिक तौर पर यीशु को मसीहा बताने वाले वे पहले लोग थे।

5. बुद्धिमान लोगों का आना। -परन्तु बैतलहम के इस बालक के पालने के आस पास इकट्ठा होने वाले केवल किसान और भविष्यवाणी करने वाले ही नहीं हैं। परमेश्वर की आशीष पाए हुए दूर-दूर रहने वाले प्रतिभाशाली लोग भी इस प्रकाशन से रोमांचित होते हैं। मसीह को सिजदा करने के लिए आने वाले मूर्तिपूजक संसार का प्रतिनिधित्व करने वाले भी उसमें थे। ''तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? ज़्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसे प्रणाम करने आए हैं।''[3] उनके नाम और राष्ट्रीयता के बारे में अलग-अलग मान्यताएं, तारे की प्रकृति और उनके ज्ञान के अनुसार व्यर्थ हैं। परन्तु दूर-दूर के वे लोग अन्यजातियों की आशा और अस्पष्ट ललक के प्रतिनिधि के रूप में खड़े उस समय की भविष्यवाणी हैं जब जाति-जाति के लोग हमारे राजा के सज़्मान में हमारे साथ शामिल होंगे।

6. हेरोदेस का आदेश और मिसर को जाना। -हेरोदेस यन्त्रणा देने की बीमारी में डूबता जा रहा था। बेचैन होने का उसके पास हर कारण था, ज़्योंकि उसका सिंहासन उसकी घृणा के शिकार लोगों के आधार पर ही टिका था। उसके राज्य में देशद्रोह फैलने वाला था। ऐसे समय में ऐसे व्यज़्ति के लिए, उन बुद्धिमान लोगों की खोज एक छुरा घोंपने की तरह थी। परन्तु आतंक और हत्या के उद्देश्य को उसने बुद्धिमान लोगों (अर्थात उन ज्योतिषियों)

को उस बालक के मिलने पर खबर देने की आज्ञा दी। स्वप्न में स्वर्गदूत की बात मानकर वे दूसरी ओर से वापस चले गए। हेरोदेस ने क्रोधित होकर बैतलहम और इसके आस-पास रहने वाले निर्दोष लोगों पर अपना गुस्सा उतारा। परन्तु उस जीवन के विरोध में तब तक कुछ हासिल नहीं हुआ जब तक वह पाप के लिए स्वेच्छा से बलिदान करने के लिए अपने आप को पेश करने के लिए तैयार न था। ''उसने घोंसले में अपनी तलवार तो घोंपी थी पर पंछी उड़ चुका था।'' ईश्वरीय अगुआई में चलने को सचेत यूसुफ हेरोदेस के आज्ञा देने से पहले ही मिसर में चला गया, परन्तु रहा वहां जहां यहूदी अधिक थे। इसके शीघ्र बाद ही हेरोदेस मर गया परन्तु अरखिलाउस से डरते हुए जो उसकी गद्दी पर बैठा था और यहूदिया में अपने पिता की नीति को लागू करने वाला था, यूसुफ नासरत में अपने घर चला गया।

पाद टिप्पणियां

[1]°°लूका 2:14. [2]मरकुस 12:37. [3]मत्ती 2:1, 2.